" प्रदूषण "
माँ-गंगा

मधुरजी (हिन्दी रत्न)
रूड़की

सजल होंगे नयन, आँसू को वो बाहर न लायेगी
नदी गंगा हमारी माँ है, कैसे गम सुनायेगी ।

अंधेरों, कीचडों से और प्रकृति की आपदाओं से
निपट लेगी मगर, इन्सान से कैसे बचायेगी ।

हुई है क्षीण माँ ये नित प्रदूषित जल को संजोये
हुई बेचैन कैसे सुत को, अब वो विष पिलायेगी ।

प्रदूषण से हुई बीमार माँ, कमजोर लगती है
रहेगी जब तलक जिन्दा, हमेशा गुन गुनायेगी ।

हमारे साथ ही कुछ जीव जलचर उसमें बसते हैं
"मधुर" मैली हुई गंगा, तो फिर कैसे जिलायेगी ।

हमारी क्रूरता ने माँ को मैला कर दिया साथी
मगर ममता से अपनी गोद में, हर दम सुलायेगी ।

प्रदूषण रहित गंगा की शपथ वैज्ञानिकों की है
चलें सब साथ हम उनके, तो गंगा मुस्करायेगी ।

शपथ है आपको , हमको सभी जन, नर और नारी को
"मधुर" ममता हँसेगी जब, तो गोदी खिलखिलायेगी ।

****